आज का पुरुषार्थ 26 June 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *" आज हम ऐसा पुरुषार्थ करेंगे कि हमारा चेहरा औरों के लिए दिव्य दर्पण बन जाये "*

हम सभी भगवान के **महान आत्मायें है** और हमारा चेहरा एक सुन्दर दर्पण हैं। उसपर यदि संतुष्टता है, उसपर यदि रूहानियत है, उसपर यदि बहुत प्रसन्नता है, तो यह तीनों चीजें सबको बहुत आकर्षित करती है।

हम ध्यान दे ...

हम बाबा को पाकर संतुष्ट हुए है? या हमारे कोई व्यर्थ संकल्प, हमारी कोई व्यर्थ की **इच्छायें**, लोगों का होने वाला हमसे बूरा व्यवहार यह कहीं हमें असन्तुष्ट तो नहीं कर देता?

रूहानियत के बजाए हम सारा दिन वाह्यमुखता में तो नहीं रहते? सारा दिन बात करते तो नहीं रहते?

हमारी **दृष्टि** वाह्यमुखी तो नहीं है? हमारी दृष्टि आत्मा पर जाती है? हम ज्ञान का थोड़ा थोड़ा भी चिन्तन करते तो है? या सारा दिन ज्ञान पूरी तरह से भूले रहते है?

यह ध्यान रखना भी परम आवश्यक है। और खुश रहना? अब रह खुशी तो बनावटी नहीं हो सकती कि laughing club की तरह जाके जोर जोर से हँस लिया जाये!

यह खुशी **स्वचिंतन** की खुशी है। यह खुशी **ज्ञान चिन्तन** की खुशी है। यह खुशी ईश्वरीय प्राप्तियों की खुशी है।

इन तीनों को हम बढ़ाते चलेंगे। यह तीनों हमारे जीवन में होंगी, तो दुसरों को भी हम इनका दान दे सकेंगे।

अगर हम बहुत **हल्के** है, अगर हम बहुत **प्रसन्नचित्त** है, तो यदि कोई टेन्शन से भरा हुआ व्यक्ति हमारे पास आयेगा, तो वह भी रिलैक्स्ड हो जायेगा।

हमारे वायब्रेशन्स हमें बहुत सुन्दर बनाने है। आज जिस एक चीज की हम प्रैक्टिस करेंगे वह पहले ही ...

" मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ और मुझ आत्मा से शक्तियों की रंग-बिरंगी पिचकारी सामने वालों पर पड़ रही है "

... यह होगा सभी आत्माओं को बहुत बड़ा दान और **सहयोग।** यह हमें पता नहीं चलेगा, पर इससे उन्हें बहुत ज्यादा मदद मिलेगी।

... हम इसतरह सारा दिन दुसरी आत्माओं की **सूक्ष्म सेवा** कर सकते है।

एक संकल्प कर ले ...

" हम दाता है .. हम मास्टर भाग्य-विधाता है .. हम पूर्वज है .. हमारे द्वार पर जो भी आये वो खाली हाथ न जाये "

देना है .. मुस्कान देनी है .. **शान्ति** के वायब्रेशन्स देने है .. समस्याओं से उलझी हुई आत्माओं को भी **सकाश** देकर उन्हें इससे बाहर निकालने की मदद करनी है ...

हमें दुसरों को **सहयोग** भी देना है। क्योंकि अब ऐसा समय चल रहा है जहां चलते चलते अनेक ब्राह्मणों में भी बहुत जल्दी उमंग उत्साह समाप्त हो जाता है।

➥ आत्मायें **lonely feeling** में आ जाता है। या हल्का सा depression हो जाता है। या कुछ न करने की इच्छा होने लगती है। ऐसे बहुत बातें आजकल सामने आ रही है कि ...

➥ अचानक खुशी ही चली गई। सेवा करने की उमंग ही नहीं रही। अंदर से ही कहीं न कहीं सूक्ष्म संशय उभरने लगा है।

इन चीजों पर बहुत ज्यादा ध्यान रखते हुए हमें स्वयं को इन सब चीजों से बचाकर रखना है।

तो विशेष उमंग में हम सारा दिन रहेंगे। और हमें उमंग में रखेंगे कुछ सुन्दर विचार। और वह विचार यही है ..

" हम कौन है ? हम पर किसकी नज़र है ? उसने हमें कितना योग्य बनाया है ? "

उसने अपना वरदानी हाथ हमारे सिर पर रखकर हमें शक्तियों से सजाया है, और वो हमसे महान कार्य लेना चाहता है ..

हम तो केवल निमित्त है. बाबा हममें योग्यतायें भी भर रहे है और वही हमसे काम भी लेगा। हमें तो केवल स्वयं को योग्य मात्र बना देना है।

....हम जितना योग्य बनते जायेंगे उतना ही बाबा हमें यूज़ करते जायेंगे।

तो आज सारा दिन हम अभ्यास करेंगे .. यहाँ से ऊपर चलने का ...

" मैं आत्मा .. उड़ चली परमधाम .. अपने खुदा दोस्त को टच किया .. वायब्रेशन्स भरे .. फिर वापिस आ गई इस देह में .. मुझसे चारों ओर वायब्रेशन्स फैलने लगे "

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org